कहानी

नदी जो भीतर बहती रही

पूजा अग्निहोत्री

आदित्य और मीरा पाँच साल से साथ रह रहे हैं. दोनों ने मिलकर अपने छोटे-से घर को सपनों और हँसी से भरकर रखा है. कोई भी उन्हें देखे तो फख्र से भर जाए और कहे कि ऐसा ही प्रेम मेरे जीवन में भी आये. सुबह की चाय, साथ में टीवी देखते हुए राजनीतिक बहसें, और किचन में रोटियाँ बेलते हुए की जाने वाली शरारतें— सब कुछ इतना सहज है जैसे दोनों का साथ हमेशा के लिए तय हो.

लेकिन एक शाम, जब किचन से ताज़ी रोटी की खुशबू उठ रही थी, मीरा अचानक गुमसुम खड़ी थी. होंठ हिले पर शब्द निकल न सके. अंततः सकुचाते हुए बोली— आदि! सुनो तुमसे कुछ कहना है. समझ नहीं पा रही कैसे कहूँ.

आदित्य ने बेलन थामे मुस्कराकर उसकी ओर देखा, फिर रोटी पलटते हुए सहज स्वर में बोला— ऐसे ही कह दो, जैसे हर रात को मेरे माथे पर चुंबन जड़ते हुए गुड नाइट कहती हो.

मीरा की निगाहें ज़मीन पर टिक गईं. उसे शब्द भारी लगने लगे.- वह सकुचाते हुए बोली- मगर यह बात गुड नाइट जितनी आसान नहीं है आदि.

मेरे लिए तुम्हारी कही हर एक बात सुनना आसान है. बस तुम वह सब बिना किसी हिचकिचाहट कह दो डार्लिंग, जो अभी कहना चाहती हो.

मीरा ने गहरी साँस ली. आदि मैं अब तुमसे प्रेम नहीं करती.

आदित्य का बेलन पर चलता हाथ कुछ पल को रुक गया. चूल्हे पर फूली हुई रोटी सीधी करने से पहले आदित्य ने उसे ध्यान से देखा. लेकिन चेहरे पर कोई शिकन न आई. उसने रोटी पर घी चुपडा, अपना काम उसी तल्लीनता से पूरा किया जैसा वह अमूमन करता है और शांत स्वर में मीरा के कंधे पर हाथ रखकर बोला— ठीक है इसमें कोई बड़ी बात नहीं है. इतनी चिंता भी मत करो.

मीरा की आँखें छलक आईं. वह पुनः हिचकिचाते हुए बोली- दरअसल मुझे किसी और से प्रेम हो गया है. मैं तुम्हें यूँ छोड़ने के लिए शर्मिंदा हूँ, मैं तुम्हें धोखा दे रही हूँ.

आदित्य उसे अपनी बाहों में भर, पास की कुर्सी पर बैठाते हुए बोला— किसने कहा कि तुमने मुझे धोखा दिया? जब तक तुम मुझसे प्रेम करती थीं, मेरे साथ रहीं. अब अगर किसी और से प्रेम है, तो मेरे पास रहना ही असली धोखा होगा— तुम्हारे लिए भी और मेरे लिए भी. वहीं जाओ, जहाँ तुम्हारा मन है.

यह कहते हुए उसकी आँखें भर आईं. मीरा भी फूट पड़ी. आँसुओं में भी दोनों के बीच एक अजीब-सी शांति थी. उसने आदित्य को आखिरी बार गले लगाया और जब दरवाज़े से बाहर निकली तो पीछे मुड़कर देखा— आदित्य अब भी मुस्कराकर हाथ हिला रहा था.

मीरा के जाने के बाद आदित्य का जीवन बाहर से सामान्य दिखता रहा. वह अपनी नौकरी करता, किताबों में डूबा रहता, मोहल्ले के लोगों से हँसकर बातें करता. परन्तु अन्दर कुछ रीता था, भीतर का घर एकदम ख़ाली रहा. सुबह की चाय बनाकर वह अब भी दो कप में डालता और दूसरा खुद ही पी लेता. रोटियाँ बेलते समय कई बार होंठों पर मुस्कान आ जाती, जैसे अब भी कानों में आवाज़ गूँज रही हो— ज़्यादा घी मत लगाना. उसने कभी किसी नए रिश्ते की तलाश नहीं की. कुछ लोगों ने पास आने की कोशिशें भी की, मगर आदित्य ने दिल के दरवाज़े ख़ामोश ही रखे. उसके लिए प्रेम कोई बदलने वाली चीज़ नहीं था, बल्कि एक भरोसा था जो मीरा के जाने के बाद भी भीतर बहता रहा. सालों तक उसका जीवन शांत और अनुशासित रहा. अकेलापन ज़रूर था, लेकिन उसने मन में कड़वाहट कभी नहीं पाली.

दूसरी ओर, मीरा ने अपने जीवन में कई रिश्ते देखे. हर प्रेम की शुरुआत रोशनी से भरी होती— वादे, सपने और उत्साह से भरी. मगर अंत आते-आते अंधेरा छा जाता. जब भी कोई रिश्ता टूटा, झगड़े हुए, आरोप लगे, कड़वी विदाई हुई. किसी ने भी उसे उस सहजता से विदा नहीं किया, जैसे आदित्य ने किया था. उसे धीरे-धीरे समझ आने लगा कि प्रेम का जाना भी उतनी ही सहजता से स्वीकार किया जाना चाहिए जितनी सहजता से प्रेम का आना स्वीकार किया जाता है. पर दुनिया को यह समझना मुश्किल था. लोग यह स्वीकार ही नहीं कर पाते कि अब कोई हमसे प्रेम नहीं करता, क्योंकि चोट दिल से ज़्यादा अहंकार पर लगती थी.

साल बीतते गए. बुढ़ापे की थकी साँसों और भारी कदमों के साथ एक दिन मीरा उसी पुराने दरवाज़े पर आ खड़ी हुई. वह न सहारा लेने आयी थी, न माफ़ी माँगने. बस एक बार उसका चेहरा देखने. मन में उठी हूक अब किसी तर्क से परे थी. जैसे भीतर कहीं कोई नदी बहती रही हो, जिसकी सतह पर सालों तक सूखा छाया रहा हो. और फिर एक दिन वह पूरी ताक़त से फूट पड़ी हो.

काँपते हाथों से उसने घंटी बजाई.

भीतर से वही परिचित मगर अब बूढ़ी और भारी आवाज़ आयी— कौन है?

मीरा की धीमी आवाज़ टूटी— मैं हूँ

दरवाज़ा खुला है, भीतर आ जाओ.

वह अंदर बढ़ी. किचन में आदित्य खड़ा था, आँखों पर मोटा चश्मा चढ़ाए, चाय बना रहा था. बिना उसकी ओर देखे ही उसने कहा— अभी भी शक्कर एक ही चम्मच, ना?

मीरा की आँखों से आँसू छलक पड़े.

आदि आज तुमसे बेहद प्रेम करती हूँ. रहा न गया तो देखने चली आयी.

आदित्य ने धीरे से कप रख दिया, उसकी ओर बढ़ा और उसे सीने से लगा लिया. माथे पर चूमते हुए बोला— इतनी आसान-सी बात कहने में रो क्यों रही हो पगली? प्रेम करती हो तो रहो मेरे साथ. प्रेम करने वालों को साथ ही रहना चाहिए. मीरा सिसकते हुए बोली— अब कहीं नहीं जाऊँगी, प्रॉमिस.

आदित्य मुस्कराया, मगर आवाज़ भर्रा गई— जब जी चाहे चली जाना, जान मेरी. शर्तों में मत बाँधो खुद को. बस दुआ करो कि इस बार तुम्हें इतना प्रेम दे सकूँ कि मुझे छोड़कर जाने का मन ही न हो.

मीरा सीने से लगकर रोती रही. आदित्य उसके बालों को सहलाता रहा. कुछ देर बाद उसका भी बाँध टूट गया. दोनों की आँखों से बहती नदियाँ एक-दूसरे से मिल गईं. आँसुओं में नमक था, मगर उस नमक में मुहब्बत का मीठा शहद घुला हुआ था. फिफ्टी-फिफ्टी बिस्किट जैसा स्वाद— थोड़ा मीठा, थोड़ा नमकीन. बिलकुल ज़िंदगी की तरह.

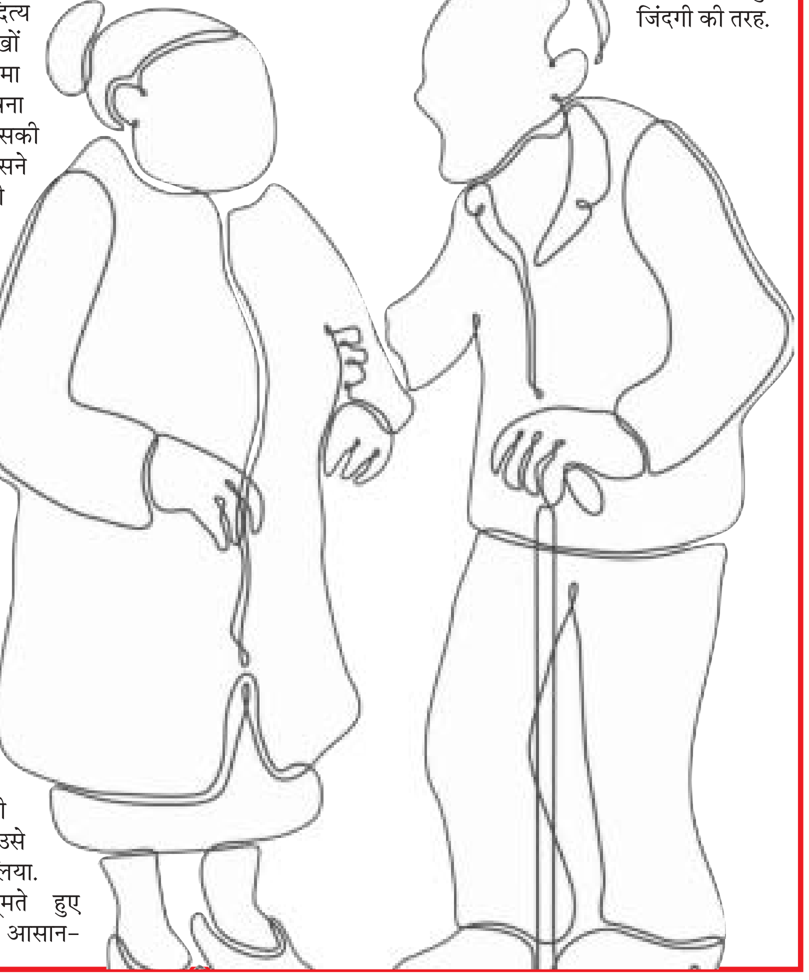

क्लास by बड़े भाई

मछली पानी में है

संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

एक बार किसी कार्यक्रम में मेरे साथ एक सज्जन बैठे थे, वहीं बैठे बैठे ही थोड़ी थोड़ी बातें भी हो रही थी, वो कुछ कुछ पूछ रहे थे, मैं भी जवाब देकर वही सवाल उनसे पूछकर बातों का सिलसिला बनाए रखा था। पर शायद वहाँ बैठे बैठे उन्होंने जितने भी सवाल पूछे, वो सारी भूमिकाएं थी, मुझसे वह सवाल पूछने के लिए जो उन्होंने कार्यक्रम के बाद पूछा।

उन्होंने पूछा - संदीप जी, आप काम क्या करते हैं ? उनके लहजे और भाव भंगिमा से यह भान हो गया था कि वो व्याख्यान को जीवन यापन के लिए अधिक पर्याप्त नहीं मानते थे।

मैंने उनसे कहा - श्री मान, मछली पानी में है। वो जोर से हँस पड़े । उनका हँसी के बाद बड़ी जिज्ञासा भरा मौन कह रहा था कि इसका मतलब बताइए, फिर उन्होंने पूछ भी लिया।

मैंने कहा- जी मैं यही कुछ लिखने सुनने सुनाने, सीखने सिखाने का ही काम करता हूँ। जो मुझे अभी करते आप देख रहे हैं। मछली के शानदार करतब पानी में ही देखे जा सकते हैं। मैंने सदैव स्वयं के लिए उस काम को अपने जीवन यापन का साधन बनाने का प्रयास किया जो मुझे हमेशा से बेहद पसंद रहा क्योंकि उस काम से जुड़ा कुछ भी मैं बहुत जल्दी सीख लेता हूँ। इससे फायदा यह हुआ कुछ ऐसा सीख लिया जिसकी दुनिया को जरूरत थी, इससे मेरी जरूरते भी पूरी होने लगी और यह यात्रा मेरी खुशी अर्जन के साथ धनार्जन का ठीक ठाक साधन बन गयी और आप सबके साथ और स्नेह से यह सुंदर चल रही है। थोड़े उतार चढ़ाव होते रहते हैं लेकिन मैं जीवन यात्रा को राफ्टिंग करने के अनुभव सा मानता हूँ। मैं यही काम करता हूँ और पूरे मन से करता हूँ तो थकता कम हूँ, इस तरह पूरी

क्षमता से कर पाता हूँ। मैं यही करते रहना चाहता हूँ मेरा पानी यही है।

मैंने दो टूक जवाब के साथ इतना सब इसलिए कहा था क्योंकि मैं समझ गया था वो मुझसे क्या जानना चाहते हैं। वो एक शानदार व्यक्ति थे। इतना बोलकर पता नहीं मैं उनका कोई दवंद दूर कर पाया या नहीं लेकिन कुछ समय बाद वो जब दोबारा मिले,बड़ी गर्मजोशी से हमने हाथ मिलाया, स्नेह से गले मिले और मैंने सहज पूछा कैसे है श्री मान , उनका शानदार मुस्कान और गर्मजोशी के साथ मेरा हाथ थामे जवाब था - संदीप जी, मछली पानी में है। दोनों हँस पड़े।

पुस्तक समीक्षा

लोक जीवन के संघर्ष और बिडम्बनाओं की कहानियाँ

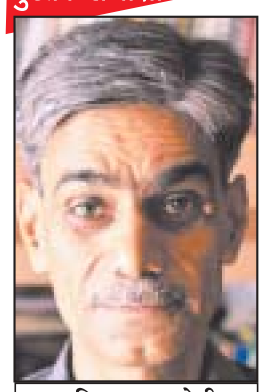

शशिभूषण बडोनी

सुप्रसिद्ध कथाकर गोविन्द सेन का चयनित कहानियाँ उनकी डेढ़ दर्जन चयनित कहानियों का संग्रह है . इस संग्रह की अधिकांश कहानियों में निमाड़ और मालवा क्षेत्र के लोक जीवन की विषम परिस्थितियों और अनेक बिडम्बनाओं का यथार्थपरक चित्रण है . कथाकार इसी क्षेत्र के निवासी हैं .

इन सभी कहानियों में गाँव समाज में फैले अंधविश्वास के मनोविज्ञान के भ्रम को उजागर किया गया है, यथा घंटी और मसाण शीर्षक कहानियों में यही कथ्य का विषय है . ये दोनों ही कहानियाँ संप्रेषणीय व पठनीय हैं . इनमें व्यंग्य का पुट कहानियों को रोचकता प्रदान करता है .

इसी प्रकार सुखदेव की सुबह हो या लाँबू फोतरूँ हो या फिर चाबी हो, ये सभी कहानियाँ व्यंग्य के पुट के यथोचित प्रयोग से बहुत पठनीय व रोचक बन गयी है. पाठक उत्सुकता से धाराप्रवाह पढ़ता चला जाता है.

सुखदेव की सुबह में कहानी नेरेटर प्रातः भ्रमण के लिए बहुत अच्छी मनस्थिति में निकलता है . वह अपने स्वास्थ्य लाभ हेतु उस वक्त एक सी नकारात्मक घटनाओं से बचना चाहता है, जिससे अनावश्यक व्यवधान हो . लेकिन उस प्रातः भ्रमण के दौरान उसे एक से बढ़कर एक बिडम्बनाजनक स्थितियाँ देखने को मिलती है . और इस प्रकार पाठक इस रोचक कहानी को उत्सुकता से पढ़ता चला जाता है.

बरकत इस संग्रह की बेहतरीन कहानी है . इस कहानी पर कथाकार को एक पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है . कहानी वाकई हृदयस्पर्शी है . कहानी में विडम्बनाजनक परिस्थितियों का अच्छा चित्रण है .

कथाकार का अध्यापन का प्रोफेशन है, अतः कहानियों में अध्यापन, अध्यापक और स्कूल का होना स्वाभाविक है . इस संग्रह में इसीलिए गुमशुदा चाँद की वापसी तोतिया स्कूटर, चाबी और इडी कहानियाँ इन सबका चित्रण करती नजर आती है . चाबी कहानी में काम के प्रति उपेक्षा का भाव रखने वाले अध्यापक का का चित्रण है . कहानी में उस अध्यापक की अन्य गैरशैक्षणिक कामों में रुचि, व्यवसायिक भाव, अध्यापन और स्कूल की व्यवस्थागत विडम्बना का रोचक दृश्यांकन है .

इसी तरह इडी कहानी में स्कूल अध्यापक का एक आदिवासी लड़की से प्रेम हो जाता है . लेकिन वह उससे विवाह करने का इच्छुक नही होता . वह आदिवासी लड़की अपने तीव्र तेवरों के साथ स्कूल में धमक कर उस अध्यापक को ढूँढती है, लेकिन वह अध्यापक स्कूल से भाग खड़ा होता है.

उसी स्कूल में उस अध्यापक को एक अच्छी पढ़ी-लिखी अध्यापिका से एकतरफा प्रेम हो जाता है और वह उससे विवाह करना चाहता है, लेकिन वह अध्यापिका उसे नहीं चाहती द्य वह कुछ निर्णय नहीं कर पाता द्य यह भी एक रोचक पठनीय कहानी है.

इस संग्रह में टापू और धूप में पिता मनोविज्ञान और मनोविश्लेषण की प्रभावशाली कहानियाँ हैं . इसी प्रकार गल्या का सपना कहानी हाशिए पर खड़े व्यक्ति की उपेक्षा, वेदना, शोषण और दमन की एक अन्य प्रभावशाली और पठनीय कहानी है . उस उपेक्षित हशिये पर खड़े पात्र की छोटी छोटी ख्वाहिशों का भी पूरा न होना अत्यंत हृदयस्पर्शी है . कहानी का नेरेटर उसकी रेडियो की चाहत को पूरा करने के लिए उसके लिए रेडियो लेकर जाता है . लेकिन दुर्भाग्य से उसे पता चलता है कि गल्या का रेडियो प्राप्त करने का वह सपना अब पूरा नहीं हो पाएगा . कहानी का कथ्य मार्मिक है .

च्स्पीड ब्रेकरज् कहानी में भी व्यंग्य के पुट के कारण कहानी रोचक बन गयी है . कहानी के धारा प्रवाह भाषा में स्पीड ब्रेकर कहीं नही है . %दसवी के भोंगा बाबा% एक अद्भुत आंचलिकता से ओत-प्रोत पात्र की जीवंत कहानी है . लोक जीवन के ऐसे जीवट पात्रों को कथाकार ने जीवित कर दिया है . यह लाजवाब कहानी इस संग्रह की उल्लेखनीय कहानी है . इसी प्रकार %स्याही% कहानी में एक स्कूल अध्यापक पर प्रशासनिक अधिकारी के दबाब की व्यंग्य शैली में लिखी एक अन्य बेहतरीन और प्रभावशाली कहानी है.

कहानियों में कई स्थानों पर पात्रों के संवाद वहाँ की लोकभाषा में दिये गये हैं. इनसे कहानियाँ जीवंत हो उठी हैं . हालांकि उन संवादो का हिन्दी रूपान्तर नहीं दिया गया है, जिससे वहाँ की लोक भाषा से अनजान पाठकों को उससे संप्रेषण में बाधा अवश्य महसूस होती है . लेकिन फिर संवादों का पुनर्पाठ करने पर अर्थपूर्ण हो जाता है.

कथा संग्रह- चयनित कहानियाँ,
कथाकार- गोविन्द सेन
प्रकाशक- न्यू वर्ल्ड प्रकाशन,
नई दिल्ली-110012,
वर्ष- 2025, मूल्य- 225/- रुपये

कविता

तलाश

नीलम दुबे

जीवन में तलाश रहनी चाहिए ?
मंजिल पर रुकना नहीं
नित-नित चलना चाहिए

गैरों की दुनिया में
अपनों की तलाश
खाली पड़े घरों में
पुराने क़िस्सों की
हर सोपान पर एक-एक क़दम बढ़ाना चाहिए

ख़ुद को खोजें, ख़ुद को जानें
दुनिया बहुतेरी, ?जीवन थोड़ा
घट भीतर से यही पुकारे
रुको ना भाई, थमो ना भाई
हर पल चलते रहना

हर मुश्किल में, हर उलझन में
रुके ना क़दम
यह जुनून हर पल चाहिए

ख़ामोशी में, शोर में
हँसने-रोने में
सुकून रखना चाहिए
तलाश रहनी चाहिए

लघुकथा

होप क्लब

प्रगति त्रिपाठी

शाम को पार्क में बैठे वर्मा जी थोड़े उदास थे. तभी उनके दोस्त तिवारी जी वहां पहुंचे.

क्या बात है वर्मा जी, आप इतने उदास क्यों बैठे हैं? तिवारी जी ने पूछा.

क्या बताऊं तिवारी जी, पत्नी का साथ छूटने के बाद जीवन बोझ लगने लगा है. दिन काटे नहीं कट रहा है.

क्यों बटे- बहू आपकी देखभाल नहीं करते?

ऐसी बात नहीं है, वो तो मेरा पहले से ज्यादा ख्याल रखने लगे हैं लेकिन सुबह सुबह ही बेटे- बहू ऑफिस चले जाते हैं और बच्चे स्कूल. मैं दिनभर घर में अकेला रहता हूं. घर मुझे काटने को दौड़ता है.

हमारे उम्र के लगभग सभी लोगों की यही समस्या है इसलिए हम सबने मिलकर होप क्लब बनाया है. जिसमें हम सब मिलकर व्यायाम, लाफिंग थेरेपी, पार्टी, आउटिंग, करते रहते हैं. आप भी हमसे जुड़ जाइए. मैं आपको गारंटी देता हूँ कि आपके जीवन जीने का नजरिया ही बदल जाएगा.

तिवारी जी की बातों ने वर्मा जी के मन को सकारात्मक ऊर्जा से भर दिया.

लघुकथा

प्यारी पहल

अशोक वाधवाणी

शांति सुबह से काफी परेशान थी. नवरात्र के समापन पर नौ कन्याओं को भोजन करवाना था, जबकि बड़ी मुश्किल से आठ कन्याओं का ही बंदोबस्त हुआ था. सभी रिश्तेदारों, परिचितों और पड़ोसियों को पूछ-पूछकर तंग आ चुकी थी. पास में खेलने वाले बच्चे ने शांति की परेशानी देखकर उसे सुझाव देते हुए कहा, आंटी जी, आठ कन्याओं के साथ-साथ एक कुमार को अगर शामिल करेंगी तो आपकी समस्या तुरंत दूर हो जाएगी.

उसकी बात सुनकर शांति चौंकी. दरअसल एक बच्चे का नाम कुमार था. उसे अपनी मां के साथ पड़ोस के माता मंदिर में आते-जाते हुए, पूरे मनोयोग से मां की तरह आंखें बंद करके माता का स्मरण करते और आदरपूर्वक माता की मूर्ति के चरणों पर नतमस्तक होते हुए भी शांति ने देखा है. उन्होंने मन ही मन में सोचा, मैं कई बार इस बच्चे के सामने कह चुकी हूं कि बेटी-बेटे में भेदभाव नहीं करना चाहिए. बच्चे तो भगवान का रूप होते हैं. शायद कुमार का आशय यही था. शांति कुमार के पास पहुंची. भोजन का न्यौता देते हुए उसके बालों में हाथ फेरते हुए मुस्कुराकर कहा, आज कुमार भी जरूर चलेगा!

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी